स्वस्थाः प्रजा निरातङ्कास्सर्वदुःखविवर्जिता। दशद्वादशवर्षाणां सहस्राणि स्थिरायुषः ॥५४॥
न तेषु वर्षते देवो भौमान्यम्भांसि तेषु वै। कृतत्रेतादिकं नैव तेषु स्थानेषु कल्पना ॥५५॥
सर्वेष्वेतेषु वर्षेषु सप्त सप्त कुलाचलाः। नद्यश्च शतशस्तेभ्यः प्रसूता या द्विजोत्तम ॥५६॥

इति श्रीविष्णुमहापुराणे द्वितीयेंऽशे द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥

तीसरा अध्याय

श्रीपराशर उवाच

उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्। वर्षं तद्भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः ॥१॥
नवयोजनसाहस्रो विस्तारोस्य महामुने। कर्मभूमिरियं स्वर्गमपवर्गं च गच्छताम् ॥२॥
महेन्द्रो मलयः सह्यः शुक्तिमानृक्षपर्वतः। विन्ध्यश्च पारियात्रश्च सप्तात्र कुलपर्वताः ॥३॥
अतः सम्प्राप्यते स्वर्गो मुक्तिमस्मात्प्रयान्ति वै। तिर्यक्त्वं नरकं चापि यान्त्यतः पुरुषा मुने॥४॥
इतः स्वर्गश्च मोक्षश्च मध्यं चान्तश्च गम्यते। न खल्वन्यत्र मर्त्यानां कर्म भूमौ विधीयते॥५॥
भारतस्यास्य वर्षस्य नवभेदान्निशामय। इन्द्रद्वीपः कसेरुश्च ताम्रपर्णो गभस्तिमान्॥६॥
नागद्वीपस्तथा सौम्यो गन्धर्वस्त्वथ वारुणः। अयं तु नवमस्तेषां द्वीपः सागरसंवृतः ॥७॥
योजनानां सहस्रं तु द्वीपोयं दक्षिणोत्तरात्। पूर्वे किराता यस्यान्ते पश्चिमे यवनाः स्थिताः ॥८॥

उद्वेंग तथा भूख का भय नहीं होता है ॥५३॥ वहाँ की प्रजा स्वस्थ, आतङ्क रहित तथा दुःखों से रहित होती है। उन सबों की आयु बारह हजार वर्ष की होती है ॥५४॥ उन वर्षों में वर्षा कभी नहीं होती है, वहाँ केवल पार्थिव जल ही है। वहाँ सत्ययुग आदि की कल्पना भी नहीं होती है ॥५५॥ इन सभी वर्षों में सात-सात कुलाचल हैं। हे द्विजोत्तम! उन पर्वतों से सैकड़ो नदियाँ निकलती हैं ॥५६॥

इस तरह श्रीविष्णुमहापुराण के द्वितीश अंश के दूसरे अध्याय का शिवप्रसाद द्विवेदी (श्रीधराचार्य) कृत हिन्दी अनुवाद सम्पूर्ण हुआ ॥२॥

भारत आदि नव खण्डों का विभाग

श्रीपराशर महर्षि ने कहा— जो समुद्र से उत्तर ओर और हिमालय से दक्षिण में स्थित है वह भारत वर्ष है, और वहाँ भरत की सन्तानें निवास करती हैं ॥१॥ हे महामुने! इसका विस्तार नव हजार योजन है। यह स्वर्ग एवं अपवर्ग (मोक्ष) प्राप्त करने वालों की कर्मभूमि है ॥२॥ यहाँ पर सात कुल पर्वत हैं महेन्द्र, मलय, सह्य, शुक्तिमान्, ऋक्षपर्वत, विन्ध्य तथा पारियात्र ॥३॥ हे मुने! इस भारत वर्ष में ही पुरुष स्वर्ग तथा मुक्ति को प्राप्त करते हैं। यहीं पर जीव तिर्यग्योनि (पशु तथा पक्षी की योनि) में तथा नरक में भी जाते हैं ॥४॥ यहीं से जीव अपने कर्मों के अनुसार स्वर्ग, मोक्ष, अन्तरिक्ष तथा पाताल में जाते हैं। भारत वर्ष को छोड़कर कहीं भी जीवों के लिए कर्म भूमि नहीं है ॥५॥ इस भारत वर्ष के नव विभाग हैं— इन्द्रद्वीप, कसेरुद्वीप, ताम्रपर्ण, गभस्तिमान्, नागद्वीप, सौम्य, गन्धर्वद्वीप, वारुण तथा नवाँ समुद्र से घिरा हुआ भारत द्वीप ॥६-७॥ उत्तर से दक्षिण तक यह द्वीप हजार

ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्या मध्ये शूद्राश्च भागशः। इज्यायुधवाणिज्याद्यैर्वर्तयन्तो व्यवस्थिताः ॥९॥
शतद्रूचन्द्रभागाद्या हिमवत्पादनिर्गताः। वेदस्मृतिमुखाद्याश्च पारियात्रोद्भवा मुने॥१०॥
नर्मदा सुरसाद्याश्च नद्यो विन्ध्याद्रिनिर्गताः। तापीपयोष्णीनिर्विन्ध्याप्रमुखा ऋक्षसम्भवाः॥११॥
गोदावरी भीमरथी कृष्णवेण्यादिकास्तथा। सह्यपादोद्भवा नद्यः स्मृताः पापभयापहाः ॥१२॥
कृतमाला ताम्रपर्णीप्रमुखा मलयोद्भवाः। त्रिसामा चार्यकुल्याद्या महेन्द्रप्रभवाः स्मृताः॥१३॥
ऋषिकुल्याकुमाराद्याः शुक्तिमत्पादसम्भवाः। आसां नद्युपनद्यश्च सन्त्यन्याश्च सहस्रशः॥१४॥
तास्विमे कुरुपाञ्चाला मध्यदेशादयो जनाः। पूर्वदेशादिकाश्चैव कामरूपनिवासिनः॥१५॥
पुण्ड्राः कलिङ्गा मगधा दक्षिणाद्याश्च सर्वशः। तथापरान्ताः सौराष्ट्राः शूराभीरास्तथार्बुदाः॥१६॥
कारूषा मालवाश्चैव पारियात्रनिवासिनः। सौवीराः सैन्धवा हूणाः साल्वाः कोशलवासिनः।
माद्रारामास्तथाम्बष्ठाः पारसीकादयस्तथा ॥१७॥
आसां पिबन्ति सलिलं वसन्ति सहिताः सदा। समीपतो महाभाग हृष्टपुष्टजनाकुलाः ॥१८॥
चत्वारि भारते वर्षे युगान्यत्र महामुने। कृतं त्रेता द्वापरञ्च कलिश्चान्यत्र न क्वचित्॥१९॥
तपस्तप्यन्ति मुनयो जुह्वते चात्र यज्विनः। दानानि चात्र दीयन्ते परलोकार्थमादरात्॥२०॥
पुरुषैर्यज्ञपुरुषो जम्बूद्वीपे सदेज्यते। यज्ञैर्यज्ञमयो विष्णुरन्यद्वीपेषु चान्यथा ॥२१॥
अत्रापि भारतं श्रेष्ठं जम्बूद्वीपे महामुने। यतो हि कर्मभूरेषा ह्यतोऽन्या भोगभूमयः॥२२॥
अत्र जन्मसहस्राणां सहस्रैरपि सत्तम। कदाचिल्लभते जन्तुर्मानुष्यं पुण्यसञ्चयात्॥२३॥

योजन में फैला है। इसके अन्त में पूर्व में किरात लोग तथा पश्चिम में यवन लोग वसे हैं ॥८॥ बीच में यज्ञ, आयुध, वाणिज्य इत्यादि अपने वर्णानुसार कर्मों को करने वाले, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र लोग रहते हैं ॥९॥ हिमालय से शतद्रू और चन्द्रभागा आदि नदियाँ निकली हैं। पारियात्र पर्वत से वेद स्मृति इत्यादि नदियाँ निकली हैं ॥१०॥ विन्ध्य पर्वत से नर्मदा तथा सुरसा आदि नदियाँ निकली हैं। ऋक्ष पर्वत से तापी, पयोष्णी, निर्विन्ध्या आदि नदियाँ निकली हैं ॥११॥ सह्य पर्वत से पाप तथा भय को विनष्ट करने वाली गोदावरी, भीमरथी, तथा कृष्णवेणी आदि नदियाँ निकली हैं ॥१२॥ मलय पर्वत से कृतमाला तथा ताम्रपर्णी आदि नदियाँ निकली हैं। महेन्द्र पर्वत से त्रिसामा तथा चार्यकुल्या आदि नदियाँ निकली हैं ॥१३॥ शुक्तिमान पर्वत से ऋषिकुल्या तथा कुमारा आदि नदियाँ निकली हैं इन नदियों की हजारों उप नदियाँ हैं ॥१४॥ इन नदियों के तट पर कुरु, पाञ्चाल, मध्य, देश निवासी लोग पूर्वदेश तथा कामरूप के निवासी, पुण्ड्र, कलिङ्ग, मगध, दक्षिण देश वासी, अपरान्त देश निवासी, सौराष्ट्र देशवासी, शूर, अभीर तथा अर्बूद लोग, करुष देशवासी मालवानिवासी, पारियात्र निवासी, सौवीर, सैन्धव, हूण, साल्ब, क्रोसलदेशवासी, माद्र, आराम, अम्बष्ठ तथा पारसी लोग निवास करते हैं ॥१५-१७॥ ये सबलोग आपस में मिलकर रहते हैं, इन नदियों का जल पीते हैं। उनके सान्निध्य के कारण हृष्ट-पुष्ट रहा करते हैं ॥१८॥ हे महामुने! भारत वर्ष में चार युग होते हैं सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग, भारत वर्ष से भिन्न वर्षों में ये युग नहीं होते हैं ॥१९॥ इस भारत वर्ष में ही परलोक के लिए लोग दान करते हैं, तपस्वीजन तपस्या करते हैं और याज्ञिक यज्ञ करते हैं ॥२०॥ सदा जम्बूद्वीप में ही यज्ञ पुरुष भगवान् की आराधना लोग यज्ञों से करते हैं, अन्य द्वीपों में नहीं ॥२१॥ हे महामुने! इस जम्बूद्वीप में भी भारत वर्ष कर्म भूमि होने के कारण श्रेष्ठ है, भारत वर्ष से भिन्न वर्ष भोग भूमियाँ हैं ॥२२॥ हे मैत्रेय! जीव हजारों हजार जन्मों के बाद यहाँ पर अपने पुण्यों से मनुष्य योनि को प्राप्त करने का अवसर प्राप्त

गायन्ति देवाः किल गीतकानि धन्यास्तु ते भारत भूमिभागे ।
स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूते भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात् ॥२४॥
कर्माण्यसङ्कल्पिततत्फलानि संन्यस्य विष्णौ परमात्मभूते ।
अवाप्य तां कर्ममहीमनन्ते तस्मिँल्लयं ये त्वमलाः प्रयान्ति ॥२५॥
जानीम नैतत्क्व वयं विलीने स्वर्गप्रदे कर्मणि देहबन्धम् ।
प्राप्स्याम धन्याः खलु ते मनुष्या ये भारते नेन्द्रियविप्रहीनाः ॥२६॥
नववर्षं तु मैत्रेय जम्बूद्वीपमिदं मया। लक्षयोजनविस्तारं संक्षेपात्कथितं तव ॥२७॥
जम्बूद्वीपं समावृत्य लक्षयोजनविस्तरः। मैत्रेय वलयाकारः स्थितः क्षारोदधिर्बहिः ॥२८॥

इति श्रीविष्णुमहापुराणे द्वितीयेंऽशे तृतीयोऽध्यायः ॥३॥

चौथा अध्याय

श्रीपराशर उवाच

क्षारोदेन यथा द्वीपो जम्बूसंज्ञोऽभिवेष्टितः। संवेष्ट्य क्षारमुदधिं प्लक्षद्वीपस्तथा स्थितः ॥१॥
जम्बूद्वीपस्य विस्तारः शतसाहस्त्रसम्मितः। स एव द्विगुणो ब्रह्मन् प्लक्षद्वीप उदाहृतः ॥२॥
सप्त मेधातिथेः पुत्राः प्लक्षद्वीपेश्वरस्य वै। ज्येष्ठः शान्तहयो नाम शिशिरस्तदनन्तरः ॥३॥
सुखोदयस्तथानन्दः शिवः क्षेमक एव च। ध्रुवश्च सप्तमस्तेषां प्लक्षद्वीपेश्वरा हि ते ॥४॥

करता है ॥२३॥ देवता लोग गीत गाते हैं कि वे पुरुष हम देवताओं से भी श्रेष्ठ हैं, जो स्वर्ग तथा मोक्ष प्राप्त करने की साधनभूत भूमि भारत वर्ष में जन्म पाते हैं। वे धन्य हैं ॥२४॥ इस कर्मभूमि में जन्म प्राप्त करके अपने फलाभिसन्धि (फल प्राप्त करने की इच्छा) से रहित होकर किए गये कर्मों को परंब्रह्म स्वरूप भगवान् विष्णु को समर्पित करके उनमें ही लीन हो जाते हैं ॥२५॥ हमलोगों को तो इस बात का भी पता नहीं है कि इस स्वर्ग प्रदान करने वाले कर्मों की समाप्ति होने पर कहाँ जन्म मिलेगा। वे लोग धन्य हैं जो भारतवर्ष में जन्म लेकर इन्द्रियों की शक्ति से रहित नहीं हैं ॥२६॥ हे मैत्रेय ! इस प्रकार से मैंने संक्षेप में नव वर्षों वाले एक लाख योजन विस्तृत इस जम्बूद्वीप का वर्णन किया ॥२७॥ हे मैत्रेय ! इस जम्बूद्वीप को बाहर से घेरकर एक लाख योजन विस्तृत क्षार समुद्र स्थित है ॥२८॥

इस तरह श्रीविष्णुमहापुराण के दूसरे अंश के तीसरे अध्याय का शिवप्रसाद द्विवेदी (श्रीधराचार्य) कृत हिन्दी अनुवाद सम्पूर्ण हुआ ॥३॥

प्लक्ष तथा शाल्मलि आदि द्वीपों का विस्तृत वर्णन

श्रीपराशर महर्षि ने कहा— जिस तरह क्षार सागर जम्बूद्वीप को चारो ओर से घेरे हुए है, उसी तरह प्लक्ष द्वीप भी क्षार समुद्र को चारो ओर से घेरे हुए है ॥१॥ हे ब्रह्मन् ! जम्बूद्वीप का विस्तार एक लाख योजन है। प्लक्ष द्वीप का उसके दो गुना (दो लाख योजन) विस्तार है ॥२॥ प्लक्षद्वीप के स्वामी मेधातिथि के सात पुत्र हैं। उन सबों में बड़ा शान्तहय और उनसे छोटे शिशिर हैं ॥३॥ सुखोदय, आनन्द, शिव, क्षेमक तथा सातवाँ ध्रुव ये सात प्लक्ष